चित्रकला के माध्यम एवं तकनीक

प्रागैतिहासिक काल से आधुनिक काल तक की कला यात्रा में कलाकारों ने समयानुसार विभिन्न माध्यमों का प्रयोग करके अपने मनोभावों को कला के रूप में अभिव्यक्त किया है। जिस प्रकार गायक स्वर और कवि शब्दों के माध्यम से अपने भावों की अभिव्यक्ति करता है। उसी प्रकार चित्रकार भी रंगों एवं रेखाओं के माध्यम से कलाकृति का निर्माण करता है। प्रागेतिहासिक काल में आदि मानव ने सरलता से उपलब्ध साधन यथा कोयला, खड़िया आदि के माध्यम का प्रयोग कर अपने इतिहास को गुफाओं में चित्रित कर अमर कर गया। समयानुसार विकास हुआ और मनुष्य ने ज्ञान प्राप्त कर चित्रण हेतु खनिज एवं पेड़–पौधों से प्राप्त विभिन्न रंगों का प्रयोग अपने चित्रों में और कुशलता से किया और आधुनिक काल तक आते–आते मनुष्य ने कृत्रिम रंगों का निर्माण कर अपनी कला को नई ऊँचाईयाँ प्रदान कर दी।

माध्यम एवं तकनीक से तात्पर्य :

दृश्य कलाओं में सृजन हेतु कलाकार जिन साधनों को प्रयोग करता है वह माध्यम कहलाती है एवं उस माध्यम के प्रयोग की विधि तकनीक कहलाती है। जैसे– केनवास पर तेल रंग, कागज पर जल रंग, चारकोल एवं पेस्टल आदि। हर माध्यम की कुछ विशेषताएँ होती हैं जो चित्र में विशिष्ट प्रकार का प्रभाव उत्पन्न करती है। किसी भी माध्यम के प्रयोग से पहले कलाकार को उसके प्रयोग की तकनीक का ज्ञान होना आवश्यक है अन्यथा कलाकार अपने भावों को अभिव्यक्त करने में असमर्थ होगा।

जल रंग

जल रंग पानी में घुलनशील माध्यम है। वैसे तो पोस्टर रंग भी जल में घुलनशील माध्यम है किन्तु तकनीकी रूप से हम पारदर्शी जल रंग चित्रण तकनीक हेतु जल रंग शब्द का प्रयोग करते है। इस हेतु शुष्क बट्टियों, ट्यूब कलर एवं बोतल में बंद रंग बाजार में उपलब्ध होते हैं। (चित्र सं. 1, 2, 3) जिन्हें पानी में घोल कर इनका प्रयोग किया जाता है। जल रंगों का कागज पर प्रयोग किया जाता है। इस हेतु हस्त निर्मित कागज का प्रयोग किया जाता है। यह बाजार में मुख्यतया तीन प्रकार का मिलता है। 1. चिकना 2. मध्यम 3. मोटा

तूलिका (ब्रश): जल रंग हेतु सेबल के बाल निर्मित तूलिका का प्रयोग किया जाता है। आजकल जानवर के बालों का प्रयोग तूलिका हेतु प्रतिबन्धित है इस कारणवश सिन्थेटिक ब्रशों का प्रयोग किया जाता है। यह गोल तथा चपटे आकारों में विभिन्न मोटाई में मिलते हैं। बारीक एवं छोटे हिस्से में काम करने कि लिये गोल आकार की तूलिका का प्रयोग होता है एवं बड़े स्थान को रंगने के लिये चपटे आकार के तूलिका का प्रयोग किया जाता है। (चित्र सं. 4)

तकनीक : सर्वप्रथम कागज को लकड़ी के बोर्ड पर ताना जाता है। इस हेतु कागज को पूर्ण रूप से गीला करके उसे बोर्ड के ऊपर इस तरह रखा जाता है कि कागज एवं बोर्ड के मध्य हवा नहीं रह पाये। फिर कागज को चारों ओर से कागज की टेप से चिपका दिया जाता है। इस हेतु कुछ कलाकार विशिष्ट रूप से बने हुऐ फ्रेम का भी उपयोग करते हैं।

कागज के सूखने के पश्चात् उस पर हल्की रेखाओं से रेखांकन किया जाता है। पारदर्शी जल रंगों के प्रयोग हेतु जिस स्थान को रंग करना होता है उस स्थान पर पहले ब्रश के द्वारा पानी लगाया जाता है फिर रंग को पानी में घोलकर कागज पर लगाया जाता है। इस तकनीक में जल का बहुत महत्वपूर्ण स्थान है। कागज पर एवं तूलिका में कितना पानी और कितना रंग हो यही कलाकार की दक्षता को दर्शाता है। पारदर्शी जल रंग चित्रण तकनीक में सफेद रंग के स्थान पर कागज के श्वेत वर्ण का ही प्रयोग करते हैं इसलिए जिस हिस्से में शुद्ध श्वेत वर्ण को दर्शाना होता है उस हिस्से में किसी भी वर्ण का प्रयोग नहीं किया जाता। इस हेतु सावधानी पूर्वक वह हिस्सा छोड़ देना होता है। जल रंग पद्धति में सर्वप्रथम हल्की तानों का तत्पश्चात् गहरी तानों का प्रयोग किया जाता है। इस हेतु रंगों को हल्के से गहरे क्रमशः पतले रूप में लगाया जाता है। एक बार गहरे रंग का प्रयोग हो जाने पर उसे हल्का नहीं किया जा सकता अतः इस हेतु पूर्व में ही निरीक्षण कर यह तय कर लिया जाता है कि कहाँ हल्के रंगों का प्रयोग करना है और कहाँ गहरे रंगों का। (चित्र सं. 11, 12, 13)

तेल रंग

तेल रंग प्राचीन एवं स्थाई माध्यमों से एक है। इसका प्रचलन प्रारम्भ में यूरोपीय कला में ज्यादा हुआ है। भारत में इसका उपयोग अंग्रेजी शिक्षा पद्धत्ति के दोरान पाया गया। लियोनार्डो दा विंची, माइकल ऐंजिलो, रेफल आदि जैसे महान यूरोपीय कलाकारों ने इसी माध्यम का उपयोग कर कला जगत

में अपनी पहचान बनाई। राजा रवि वर्मा एवं अमृताशेर गिल के चित्रों से इस माध्यम को भारत में पहचान मिली। सूखने में अधिक समय लेने के कारण तेल रंगों में आवश्यकतानुसार पुनः सुधार करना आसान होता है। इसी कारण यथार्थवादी चित्रण शैली में इस माध्यम का उपयोग बहुत अच्छे से होता है। प्रारम्भ में तेल रंग हेतु लकड़ी, दीवार, एवं जेसो धरातल आदि का प्रयोग किया जाता था लेकिन वर्तमान में तेल रंग कागज व केनवास का प्रयोग किया जाता है।

केनवासः केनवास मूलतः लिलेन या सूत का बना उपयोग में लिया जाता है। केनवास पर कार्य करने से पहले उसे सबसे पहले लकड़ी की चौखट (फ्रेम) पर अच्छे से खींच कर तान कर कीलों या स्टेपल पिन्स के माध्यम से लगाया जाता है। केनवास को तानने के पश्चात् इस पर सरेस या फेविकोल लगाते हैं जिसे साइजिंग कहते हैं। इसके सूखने के बाद सफेदा वारनिश या तारपीन एवं अलसी के तेल में मिलाकर लगाते है। आजकल इस हेतु बाजार में उपलब्ध प्राइमर का भी उपयोग किया जाता है। इस प्रक्रिया को प्राइमिंग कहते हैं। इसके सूखने के बाद केनवास चित्रण हेतु तैयार हो जाता है।

तूलिका, कलर पेलेट एवं माध्यम : तेल रंग के मिश्रण हेतु अंग्रेजी के अक्ष 'डी' के आकार की कलर पेलेट का प्रयोग किया जाता है जो लकड़ी की बनी होती है। (चित्र सं. 5) चित्रण हेतु ज्यादातर चपटे ब्रश का प्रयोग किया जाता है जो कि सूअर के बालों से बने होते हैं किन्तु आजकल कृत्रिम बालों (सिन्थेटिक हेयर) से बने ब्रश का उपयोग किया जाता है। (चित्र सं. 6) बारीक एवं सौम्य प्रभाव दिखाने हेतु मुलायम बालों वाले ब्रश का भी उपयोग किया जाता है। जैसा के तेल रंग नाम से ज्ञात होता है कि इसके प्रयोग में माध्यम हेतु तेल का प्रयोग होता है। इस हेतु अलसी का तेल व तारपीन का तेल जरूरत अनुसार होता है। चित्र को यदि जल्दी सुखाना है तो कभी–कभी थोड़ी मात्रा में वारनीश का भी प्रयोग किया जाता है।

तेल रंग चित्रण विधिः तेल रंग चित्रण विधि में सर्वप्रथम चारकोल से रेखांकन कर लिया जाता है। जिसे ब्रन्ट साइना या ग्रे रंग के द्वारा स्थाई कर लिया जाता है। तत्पश्चात् गहरी तानों का प्रयोग किया जाता है फिर मध्यम तान का एवं अन्त में हल्की तानों का प्रयोग किया जाता है। इस प्रक्रिया में कई दिन भी लग सकते हैं। पहले रंगों का प्रयोग पतले रूप में किया जाता है बाद में दूसरी या तीसरी परत के रूप में रंगों की मोटी परत का प्रयोग किया जाता है। दूसरी विधि में तेल रंग चित्र को गील–गीले में एक बार में पूर्ण कर लिया जाता है यह तकनीक अला– प्राइमा कहलाती है। (चित्र सं. 14, 15, 16)

तेल रंगों के प्रयोग में ब्रश के अतिरिक्त पेंटिंग नाइफ का भी प्रयोग किया जाता है जिसके माध्यम से रंगों को मक्खन की भांती मोटी परतों के रूप में लगाया जाता है। (चित्र सं. 7) तेल रंगों के द्वारा चित्र में विभिन्न प्रकार के पोत का भी सृजन हो पाता है।

एक्रेलिक रंग

आधुनिक चित्रकला में एक्रेलिक रंगों का प्रयोग अधिकतम चित्रकार कर रहे हैं। यह माध्यम सन् 1950 के बाद प्रचलन में आया। यह जल में घुलनशील माध्यम में और सूखने के पश्चात् जलरोधी हो जाते हैं। यह इसका विशेष गुण है। इसकी कमी रंगों का बहुत जल्दी सूखना है जिस कारण यर्थाथवादी चित्रों छाया प्रकाश देने में कठिनाई आती है परन्तु आधुनिक काल में समय की कमी होने के कारण इसका जल्दी सूखना एक गुण भी है जिससे चित्रकार को रंगों के सूखने का इंतजार नहीं करना पड़ता। एक्रेलिक रंग पारदर्शी माध्यम है किन्तु रंगों की मोटी परतों का प्रयोग एवं सफेद रंगों का प्रयोग करने पर इसकी पारदर्शिता नहीं रहती अतः इनका प्रयोग पारदर्शी जल रंग की भाँति भी हो सकता है और अपारदर्शी तेल रंग की भाँति भी हो सकता है। इस माध्यम के द्वारा कई तरह के पोत का निर्माण हो सकता है जो कि आधुनिक कला का एक महत्वपूर्ण तत्व है। इन रंगों में टेक्सचर वाईट भी मिलता है जिससे मोटे पोत का निर्माण होता है। मुलायम बालों वाले चपटे और गोल ब्रश का प्रयोग रंगों को सतह पर लगाने हेतु होता है। इसके अलावा कई तरह के रोलर्स भी मिलते हैं जिससे पोत का निर्माण भी होता है। (चित्र सं. 21)

पेस्टल रंग

पेस्टल रंग शुष्क माध्यम है। इसमें रंगों की वर्तिकाएँ होती हैं जिन्हें कागज पर रगड़ कर चित्र बनाया जाता है। इस माध्यम का प्रयोग 15 वीं शती से आरम्भ हुआ था। 20वीं शती के फ्रांस के चित्रकार देगा ने इस माध्यम का बहुत सफलता से प्रयोग किया था। यह दो तरह के पाये जाते हैं–

1 ड्राय पेस्टल 2 ऑयल पेस्टल

ऑयल पेस्टल ड्राय पेस्टल की तुलना ज्यादा स्थाई है। (चित्र सं. 9, 10) बच्चों के द्वारा इन दोनों माध्यमों का बहुत सफलता से प्रयोग किया जाता है। पेस्टल रंगों हेतु धरातल के रूप में मोटा खुरदुरा रंगीन कागज का प्रयोग किया जाता है ताकि रंगों की वर्तिकाओं को रगड़ने से वह फटे नहीं और खुरदरा होने से रंग बत्तियों से छूट कर कागज पर आ जाये। कागज पर रगड़ने के पश्चात् उंगलियों से या

कागज की बत्तियों से रंगों को कागज पर ही मिलाया जाता है और वांछित प्रभाव उत्पन्न किया जाता है। पेस्टल रंग के उपयोग के समय वर्तिकाओं से झड़ कर रंगों का चूर्ण कागज पर बिखर जाता है जिसे समय–समय पर फूँक के माध्यम से हटा देना चाहिये। चित्र बन जाने के पश्चात् रंगों का स्थायीकरण आवश्यक है अन्यथा रंग हाथ लगने पर हट सकते है और चित्र खराब हो सकता है। इस हेतु बाजार में कई प्रकार के फिक्सर मिलते है। जिसका स्प्रे कर रंगों को स्थाई किया जाता है। पेस्टल माध्यम में बने चित्र को फ्रेम करवाते समय यह ध्यान रखना चाहिये कि चित्र और काँच के मध्य कुछ दूरी बनी रहे अन्यथा काँच से चिपक कर चित्र खराब हो सकता है। (चित्र सं. 19, 23)

वॉश चित्रण तकनीक

मुख्यतया यह चीनी–जापानी चित्रण तकनीक है जिसका भारतीय कला के पुनरूत्थान कालीन चित्रकारों ने प्रयोग किया था जो आज बंगाल शैली के नाम से भी जानी जाती है। इस तकनीक में पारदर्शी जल रंग तकनीक का ही प्रयोग थोड़े भिन्न प्रकार से किया जाता है। इसमें धरातल हेतु अंग्रेजी व्हाट्समेन कागज का प्रयोग किया जाता है। कागज को फ्रेम पर कस कर रेखांकन कर आवश्यक स्थानों पर हल्की गहरी घातों का प्रयोग किया किया जाता है व सूखने के पश्चात् अतिरिक्त रंग को पानी व तूलिका के माध्यम से धोया जाता है। यह प्रक्रिया निरन्तर चलती रहती है इससे रंग कागज के अन्दर बैठ जाते हैं एवं चित्र में एक सौम्य वातावरण का निर्माण होता है एवं अन्त में बारीक तूलिका का प्रयोग कर चित्र की खुलाई (बारीक रेखांकन) की जाती है। (चित्र सं. 17)

टेम्परा चित्रण तकनीक

टेम्परा माध्यम का भारतीय कला में सबसे अधिक प्रयोग हुआ है चाहे वह अजन्ता में बने चित्र हों या राजस्थानी शैली, मुगल शैली, पहाड़ी शैली में बने चित्र हो। मध्यकालीन यूरोपीय कला में भी इस माध्यम का प्रयोग हुआ है। मूलतः यह अपारदर्शी जल रंग माध्यम है। इसकी मुख्य विशेषता इसका पायस है। इस हेतु अण्डे की जर्दी एवं सरेस आदि का प्रयोग किया जाता है। वर्तमान में गोंद, ग्लिसरीन तथा अलसी के तेल का भी प्रयोग किया जाता है। धरातल हेतु लकड़ी, जैसा बोर्ड, कागज एवं केनवास का भी प्रयोग किया जाता है। जिस पर पहले खड़िया मिट्टी या प्लास्टर ऑफ पेरिस का पानी में घोल बनाकर उसमें सरेस मिला कर लेप लगाया जाता है। इसके सूखने के बाद रेखांकन किया जाता है। रंगों हेतु प्राचीन

काल में खनिज रंगों का प्रयोग किया जाता था। वर्तमान में बाजार में मिलने वाले पोस्टर रंग भी टेम्परा तकनीक में काम आते हैं। तूलिका हेतु मुलायम बालों वाली गोल तूलिका व चपटी तूलिका का प्रयोग किया जाता है। (चित्र सं. 18)

भित्ति चित्रण तकनीक

भित्ति चित्र से अर्थ भित्ति (दीवार) पर बने चित्र से है। प्रागैतिहासिक काल से भित्ति का प्रयोग चित्रण हेतु होता आया है। अजन्ता, बाघ और जोगिमारा में बने चित्र इसी तकनीक का परिणाम है। यूरोपीय कला में भी भित्ती चित्रण तकनीक का प्राचीन काल से प्रयोग हुआ है। भित्ती चित्रण विधि में दो तरह की तकनीक का प्रयोग किया जाता है।

1 फ्रेस्को ब्यूनो या आला गिला पद्धति :

इस पद्धति में सर्वप्रथम चित्रण हेतु दीवार का निर्माण किया जाता है। इसके बाद दीवार पर चूना एवं बालू मिलाकर लगाया जाता है। दीवार के जितने भाग पर चित्रांकन करना होता है उतने भाग पर चूना प्लास्टर एवं शंख चूर्ण मिश्रण के घोल की परत लगाई जाती है। फिर गीले–गीले प्लास्टर में ही रेखांकन किया जाता है। रेखांकन के पश्चात् गीले प्लास्टर वाली दीवार पर ही आकारों में रंगांकन कर दिया जाता है जिससे रंग दीवार के प्लास्टर में अच्छी तरह से बैठ जाते हैं, स्थाई हो जाते हैं। इससे मौसम एवं समय का प्रभाव चित्रों पर नहीं पड़ता। इस पद्धति में जितना प्लास्टर का गीला होना आवश्यक है अतः उतने ही हिस्से पर प्लास्टर किया जाता है जितने पर एक समय में प्लास्टर के गिले रहते चित्रण एवं रंगांकन संभव है। यह भित्ति चित्रण की इतालवी पद्धति कहलाती है। इस हेतु खनिज रंगों का प्रयोग किया जाता है।

2 फ्रेस्को सिक्को या सूखी पद्धतिः

भित्ति चित्रण की इस पद्धति में धरातल हेतु दीवार बनाकर उस पर बालू एवं चूने का प्लास्टर किया जाता है। जब वह पूरी तरह सूख जाता है तब उस पर रेखांकर करके रंग भरे जाते हैं। रंगों में गोंद, सरेस, अण्डे की जर्दी आदि मिलाकर प्रयोग किया जाता है। यह पद्धति आला गिला पद्धति से कम स्थाई है। इसमें रंगों की चमक भी एक समान नहीं रहती और समय के साथ इनका प्रभाव भी धुंधला पड़ता जाता है। (चित्र सं. 21)

चित्र सं. 1

चित्र सं. 2

चित्र सं. 3

चित्र सं. 4

चित्र सं. 5

चित्र सं. 6

चित्र सं. 7

चित्र सं. 8

चित्र सं. 9

चित्र सं. 10

चित्र सं. 11

चित्र सं. 11

चित्र सं. 12

चित्र सं. 13

चित्र सं. 14

चित्र सं. 16

चित्र सं. 15

चित्र सं. 17

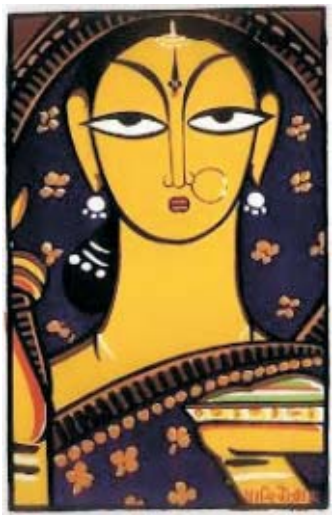

चित्र सं. 18

चित्र सं. 19

चित्र सं. 21

चित्र सं. 22

चित्र सं. 23

अक्षरांकन या सुलेख या कैलीग्राफी

अक्षरांकन या सुलेख या कैलीग्राफी

अक्षरांकन या सुलेख या कैलीग्राफी अक्षर कला है। भारत में इसके प्रमाण अशोक काल से ही पाये जाते है। सम्राट अशोक के शिलालेखों में कैलीग्राफी या अक्षरांकन शैली का प्रयोग किया गया है। प्राचीन काल में ताड़ के पत्ते पर धुंएँ से कालिख कर लेखन होता था। भारत में बाल्य काल से ही सुलेख लिखाने की परंपरा रही हैं। पाटी पर सुलेख भारतीय शिक्षण पद्धत्ति का हिस्सा रही हैं। इस हेतु सरकंडे से बनी कलम और स्याही का प्रयोग किया जाता था। आजकल बाजार में मिलने वाले क्रोकल पेन, होल्डर का उपयोग कैलीग्राफी के लिये किया जाने लगा है। विभिन्न आकार के ब्रश का उपयोग भी कैलीग्राफी के लिये किया जाता रहा है। कम्प्यूटर के माध्यम से भी कैलीग्राफी की जाने लगी है। कैलीग्राफी हेतु काली स्याही के प्रयोग का प्रचलन है।

महत्वपूर्ण बिन्दुः

1. दृश्य कलाओं में सृजन हेतु कलाकार जिन साधनों को प्रयोग करता है वह माध्यम कहलाती है एवं उस माध्यम के प्रयोग की विधि तकनीक कहलाती है। जैसे– केनवास पर तैल रंग, कागज पर जल रंग, चारकोल एवं पेस्टल आदि।
2. जल रंग पानी में घुलनशील माध्यम है। यह पारदर्शी माध्यम है। वाश तकनीक में जल रंगों का प्रयोग किया जाता है।
3. टेम्परा अपारदर्शी जल रंग माध्यम है।
4. तेल रंग अपारदर्शी माध्यम है। यह देर से सूखने वाला माध्यम है।
5. ऐक्रेलिक रंगों का पारदर्शी एवं अपारदर्शी दोनों प्रकार से उपयोग किया जा सकता है।
6. भित्ति चित्रण विधि दो प्रकार की हैं:– 1 फ्रेस्को ब्यूनो या आला गिला पद्धति 2. फ्रेस्को सिक्को या सूखी पद्धति

अभ्यासार्थ प्रश्न

बहुचयनात्मक प्रश्न

1. टेम्परा माध्यम में कौन सा प्रभाव आता है?

(अ) पारदर्शी (ब) अपारदर्शी

(स) चमकीला (द) धूसर

2. आला गीला पद्धति में कौन से रंगों का प्रयोग किया जाता है?

(अ) तेल रंग (ब) जलरंग

(स) पेस्टल रंग (द) खनिज रंग

3. जलरंग चित्रण में कौन सा प्रभाव उत्पन्न होता है?

(अ) पारदर्शी (ब) साधारण

(स) अपारदर्शी (द) इनमें से कोई नहीं

4. पेस्टल रंग माध्यम है–

(अ) शुष्क (ब) जलरंग

(स) खनिज (द) इनमें से कोई नहीं

5. वाश तकनीक में कौन से रंगों को प्रयोग होता है?

(अ) तेल रंग (ब) पोस्टर रंग

(स) पेस्टल रंग (द) जल रंग

अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न

1. जल रंगों में किसके बालों की तूलिका का प्रयोग किया जाता है?
2. टेम्परा रंग किस रूप में बाजार में मिलते हैं?
3. ऐक्रेलिक रंग का विशेष गुण क्या है?
4. पेस्टल रंग को स्थाई करने के लिये किसका प्रयोग किया जाता है?
5. तेल चित्रण तकनीक में कौनसी तूलिका का प्रयोग होता है?

लघूत्तरात्मक प्रश्न

1. आला गिला पद्धति से आप क्या समझते हैं?
2. टेम्परा तकनीक से आप क्या समझते हैं?
3. ऐक्रेलिक रंग तकनीक के बारे में समझाईये।
4. जल रंग तकनीक के बारे में संक्षेप में लिखें।
5. माध्यम से आप क्या समझते हैं?
6. कैलीग्राफी किसे कहते हैं?

निबन्धात्मक प्रश्न

1. भित्ति चित्रण क्या है? इसके बारे में विस्तार से लिखें।
2. वाश तकनीक के बारे में लिखें।
3. तेल रंग चित्रण तकनीक पर विस्तार से लिखें।
4. पेस्टल रंग पर विवेचना कीजिये।
5. चित्र में माध्यम व तकनीक पर एक निबन्ध लिखें।

उत्तरमाला बहुचयनात्मक प्रश्न

1. ब 2. द 3. अ 4. अ 5. द